*Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education*
*Vol. 17, Issue No. 1, April-2020, ISSN 2230-7540*

# प्रमुख जनजातियों के आर्थिक व सामाजिक जीवन शैली का अध्ययन

**Dr. Arvind Kumar Upadhyay***

Department of History

***सारांश –*** *जनजातियाँ हमारे देश का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यह भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों में पाई जाती हैं। कुछ उल्लेखनीय राज्य हैं- पश्चिम बंगाल, बिहार, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ इत्यादि। यह अध्ययन बंगाल राज्य में पाई जाने वाली विभिन्न जनजातियों के ऊपर है। इस अध्ययन में विभिन्न जनजाति समुदाय के जीवन शैली का अध्ययन किया गया है। जिससे यह पता चलता है कि यह जनजातियाँ मुख्य रुप से कृषि और जंगलों से उपलब्ध होने वाली वस्तुओं पर निर्भर है। यह जनजातियाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है।*

***शब्द कुंजी (Keywords) – जनजातियाँ, संथाल, साबर, लोधा, कृषि (Tribes' Santal, Sebar Lodha Agriculture)***

----------X----------

## परिचय (INTRODUCTION):

भारत जैसे विकासशील देश में विभिन्न जनजातियों का समूह अलग-अलग राज्यों में पाया जाता है। जनजातियों का भारत के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। इन जनजातियों के सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं में विभिन्नता देखी जा सकती है। आभाग्यवश शहरों में रहने वाले लोगों की तुलना में यह जनजातियाँ जो कि प्रमुख रुप से ग्रामीण और अविकसित क्षेत्रों में होती हैं, विभिन्न समस्याओं का सामना करती हैं। प्रमुख रुप से अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएँ, साक्षरता की सुविधाएँ और रोजगार के प्रबंध अपर्याप्त हैं। यह अध्ययन पश्चिम बंगाल में जाई जाने वाली जनजातियाँ जैसे कि संथाल, साबर और लोधा पर है।

## उद्देश्य एवं अनुसंधान पद्धति (OBJECTIVE & METHODOLOGY):-

इस अध्ययन में भारत के पश्चिम बंगाल राज्य में पाये जाने वाली विभिन्न जनजातियों का सामाजिक व आर्थिक अध्ययन किया गया है। जनजातियाँ जैसे कि साबर, संतर और लोधा पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले में पाई जाती हैं। पश्चिम बंगाल में विभिन्न जनजातियाँ मौजूद हैं। अतः यह राज्य इन समुदायों के आर्थिक व सामाजिक जीवन के अध्ययन का केन्द्र है। इस अध्ययन से चुनी गई जनजातियों को होने वाली सामाजिक व आर्थिक समस्याओं का विवरण किया गया है।

## विचार विमर्श और परिणाम (DISCUSSION & RESULTS):

भारत की जनसंख्या का लगभग 8% जनसंख्या जनजातीय है जो कि एक बड़ा आँकड़ा है। विश्व स्तर पर (दत्त, 2007) यह जनजाति मुख्य रुप से कुपोषित है एवं इनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है। (घोष, 2007) संतय जनजाति समुदाय भारत देश का तीसरा सबसे प्रमुख जनजाति समुदाय है। प्रथम और द्वितीय जनजाति समुदाय गोंड और भिल है। (बसु, 2004)

संथाल जनजाति समुदाय पश्चिम बंगाल के अलावा बिहार राज्य और उड़िसा में भी पाया जाता है। पश्चिम बंगाल में कुछ प्रमुख जिले जैसे बिरभुम, मिदनापुर, बानकुरा और पुरुलिया में विशेष रुप से संथाल जनजाति का आवास है। यह जनजाति अपने जीवन-यापन के लिए कृषि की जमीन की तलाश में भटकती रहती थी। (थार गुप्ता, 2009) किसी अध्ययन में पाया गया कि संतल जनजाति का मूल निवास स्थान भारत में है जो कि मुख्य रुप से पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़िसा और छोटानागपुर में है। (अकन, 2015) संथाल जनजाति पर हिन्दुओं की परंपरा का काफी प्रभाव है जिसे

www.ignited.in

उनके धार्मिक त्योहारों में देखा जा सकता है। संथाल जनजाति अपने त्योहारों को बड़ी धूमधाम से मनाती है। संगीत, गायन और नृत्य का काफी प्रचलन है। कुछ बंगाली शोधकर्ताओं के अनुसार संथाल नाम पश्चिम बंगाल में स्थित एक जगह 'संमतलपाल' के नाम पर पड़ा है। इस जगह पर भारी मात्रा में संथाल जनजाति रहती थी। संथाल अपने जीवन यापन के लिए प्रमुखतः शिकार करना, मछली पकड़ना और कृषि पर निर्भर है। (आर्चर, 2020) संथाल शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते हैं और बंगाली में ही औपचारिक शिक्षा लेते हैं। कृषि कार्य में वह धान, दाल, आलू, गेहूँ, केला इत्यादि का उत्पादन करते हैं। (हेम्ब्रम, 2016)।

साबर एक प्रकार की जनजाति है जो मुख्य रुप से मध्यप्रदेश, उड़ीसा, आन्ध्रप्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल के पहाड़ी इलाकों में पाई जाती है। यह जनजाति भी अन्य जनजातियों की तरह कृषि पर मुख्य रुप से निर्भर है। यह जनजाति काफी अंधविश्वास को मानती है। (बसु, 2004) बंगाल के पुरुलिया जिले के गाँवों में इनका निवास है। यह जनजाति जंगलों में रहती है और अपने रीति-रिवाजों का पालन करती है। (हिकमैन, 2018) इन रीति-रिवाजों में शिकार करना, नाचना, गाना, जंगलों के जानवरों के साथ खेलना इत्यादि शामिल है। (हिकमैन और सिन्हाए 2018) लोधा जनजाति मिदनापुर के जंगलों में फैली हुई है। यह पुरुलिया और हुगली जिलों में भी पाई जाती है। यह जनजाति जंगलों की वनस्पतियों को पास के स्थानीय बाजार में बेचते हैं। इसके अलावा साँप की स्कीन बेचकर अपना धंधा करते हैं। (धारगुप्ता, 2009) शिकार करना इस जनजाति का प्रमुख जीवनयापन का स्रोत है। आधुनिक काल में यह जनजाति कृषि को महत्व दे रही है। अतः जंगल की वनस्पतियों के साथ-साथ कृषि से भी अपना जीवन-यापन कर रही है। (मजूमदार और चटर्जी, 2020)

संतल, साबर और लोधा के अतिरिक्त बिरहोर भी एक प्रमुख जनजाति है। जो कि अन्य जनजाति की तरह ही समाज का मुख्य हिस्सा है। इन जनजातियों को समाज का प्रमुख हिस्सा मान लिया गया है और सरकार इनके जीवन-स्तर को सुधारने के लिए पर्याप्त मात्रा में सामाजिक एवं आर्थिक संरचना उपलब्ध करा रही है।

## निष्कर्ष (CONCLUSION):

यह अध्ययन पूर्वी भारत के पश्चिम बंगाल राज्य में पाई जाने वाली प्रमुख जनजातियों के जीवन पर प्रकाश डालता है। इसमें संतल, साबर और लोधा जैसे प्रमुख जनजाति का अध्ययन किया गया है। इससे पता चलता है कि यह जनजाति मुख्य रुप से जंगल और कृषि पर निर्भर है। अपना रीति-रिवाजों को मानती है। इनको शहर और गाँवों के नागरिकों की तरह जीवन के मूलभूत सुविधाओं को उपलब्ध कराना जरुरी है। यह जनजातियाँ ग्रामीण क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। अतः इन सभी के विकास का कदम, ग्रामीण अर्थव्यवस्था की तरफ विकास का कदम है।

## संदर्भ: (REFERENCE)


अकनए एम. आर. ए. अल मामुन, एम. ए., नाजनीन, टी., अल पावेल, एम. ए., यास्मीन, एल., और रहमान. एस. ए. (2015). बांग्लादेश के बरिंद ट्रैक्ट में संथाल समुदाय की जमीन और जीवन पर एक नृवंशविज्ञान जांच। अमेरिकन जर्नल ऑफ सोशल साइंस रिसर्चए 1(2), 90-95।

आर्चरए डब्ल्यू. जी. (2020). द हिल्स ऑफ़ फ्लूट्स: आदिवासी भारत में जीवन, प्रेम और कविता: संथालों का एक चित्र. रूटलेज।

बासु एस, कपूर के.ए., बसु एस.के. (2004)। आदिवासियों के बीच परिवार नियोजन का ज्ञान, दृष्टिकोण और अभ्यास, द जर्नल ऑफ़ फैमिली वेलफेयर, 50 (1): 24-30

दत्त बनिक, एस., बोस, के., बिसाई, एस., भट्टाचार्य, एम., दास, एस., जनाना, ए., और पुरकित, पी. (2007)। नक्सलबाड़ी, पश्चिम बंगाल के वयस्क Dhimals में अंडरस्टेक्शन: पूर्वी भारत के अन्य जनजातियों के साथ तुलना।

धारगुप्ताए ए., गोस्वामी, ए., सेन, एम., और मजुमदार, डी. (2009)। पश्चिम बंगालए भारत के टोटो, संताल, सबर और लोढ़ा जनजातियों की स्वास्थ्य स्थिति पर सामाजिक-आर्थिक मापदंडों के प्रभाव पर अध्ययन, जनजातियों और जनजातियों का अध्ययन, 7 (1), 31-38।

घोष, के. (2007)। झारखंड और पश्चिम बंगाल में अनुसूचित जनजातियों के बीच साक्षरता और शिक्षा में लैंगिक अंतर, समाजशास्त्रीय बुलेटिन, 56 (1), 109-125।

हेम्ब्रमए आर., घोष, ए., नायर, एस., और मुर्मू, डी. (2016). संताल गाँव के जीवन में एक दृश्य


www.ignited.in

यात्रा, आदिवासी और स्वदेशी अध्ययन जर्नल (Jais), 3 (1), 17-36।

हिकमैन, आर. ए. और सिन्हा, पी. (2018)। सबर के तरीके जानने के: शैक्षिक पारिस्थितिकी के प्रति सतत विचार, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ आर्ट एंड डिज़ाइन एजुकेशन, 37 (1), 113-124।

मजूमदार, के., ए. और चटर्जी, डी. (2020). वन अधिकार अधिनियम 2006, प्रथागत कानून, और सतत सामुदायिक विकास: पश्चिम बंगाल, भारत के लोढ़ा जनजाति पर अध्ययन। बिल्डिंग सस्टेनेबल कम्युनिटीज़ में (pp. 717-732)। पालग्रेव मैकमिलन, सिंगापुर।

**Corresponding Author**

**Dr. Arvind Kumar Upadhyay***

Department of History